शान्ति मन्दिर द्वारा प्रकाशित यह ई-पत्रिका आप सबको समर्पित है ।

सिद्ध मार्ग

शान्ति मन्दिर Temple of Peace

© Shanti Mandir जुलाई २०१७, संस्करण २२

प्रिय आत्मन्, सप्रेम जय गुरुदेव ! सिद्ध मार्ग ई-पत्रिका का बाईसवाँ अंक प्रस्तुत है । इस अंक में महामण्डलेश्वर स्वामी नित्यानन्द जी द्वारा कुछ समय पूर्व शान्ति मन्दिर मगोद में दिये गये प्रवचन के सम्पादित अंश प्रस्तुत है ।

❋श्रीगुरुदेव❋

हमें विचार करना चाहिए कि हम अपने स्तर को कैसे बढ़ाएँ ? इसके लिए सतत प्रयासरत रहना पड़ेगा । हमें अपने व्यवहार से सज्जन बनना है, सदाचार से जिन्दगी को जीना है। किसी ऋषि ने कहा है- आचारहीन मनुष्य को वेद भी पवित्र नहीं कर पाते अर्थात उनका वेदों से भी कल्याण नहीं है । गीता में आता है- उद्धरेत् आत्मानम् आत्मानम् अर्थात् हमें खुद का खुद से उद्धार करना है । दर्शनमात्र से उद्धार हो जाता है इस विषय में बाबा जी एक कहानी कहा करते थे कि एक बार नारद जी भगवान के पास जाते हैं और दर्शन के बारे में पूछते हैं हे भगवन ! दर्शन का क्या महत्त्व है ? भगवान उनको गोशाला

आचारहीन मनुष्य को वेद भी पवित्र नहीं कर पाते अर्थात उनका वेदों से भी कल्याण नहीं है ।

हमको समझना चाहिए और विचार करना चाहिए कि जब हम दर्शन करें तो साक्षात भगवान है ऐसा भाव रखकर करें, पता नहीं कौन सी योनि के पाप से तुम्हें छुटकारा मिल जाए और कल्याण हो जाए ।

में भेज देते हैं । गोशाला में गोबर में रहने वाले कीड़े से जाकर पूछो दर्शन का क्या महत्त्व है ? नारद जी वहाँ जाकर उस कीड़े से पूछते हैं, सुनते ही कीड़े का स्वर्गवास हो जाता है । नारदजी भगवान के पास आकर सब वृत्तान्त सुनाते हैं । भगवान दोबारा से नारद जी को किसी पक्षी के पास भेजते हैं और पक्षी का सुनकर कल्याण हो जाता है । नारद जी आश्चर्य में पड़ जाते हैं और सोचते है कि जिससे पूछ रहा हूँ उसी का कल्याण हो जाता है । नारद जी भगवान के पास दोबारा जाते हैं और सब कुछ बताते हैं । इस बार भगवान नारद जी से कहते हैं कि एक राजा के यहाँ अभी अभी युवराज का जन्म हुआ है उस युवराज से जाकर पूछो । आज्ञानुसार जाते हैं अकेले में उस युवराज से दर्शन का महत्त्व पूछते हैं । तभी वह युवराज कहता है महाराज दर्शन का बहुत महत्त्व है, मैं वही गोबर का कीड़ा हूँ जिसको आपने पहली बार दर्शन दिए थे । उसी समय मैं उस योनि को त्यागकर पक्षी योनि में गया, वहाँ भी आपके दर्शन पाकर में धन्य हो गया और आज मैं आपके दर्शन के फलस्वरूप ही युवराज बनकर जन्म लिया हूँ । ऐसे ही हमको समझना चाहिए और विचार करना चाहिए कि जब हम दर्शन करें तो साक्षात भगवान हैं ऐसा भाव रखकर करें, पता नहीं कौन सी योनि के पाप से तुम्हें छुटकारा मिल जाए और कल्याण हो जाए । हम में एक कमी है कि जब हमारा कर्म करने का क्रम आता है तो हम ये सोचते हैं हमारे पीछे आने वाला करेगा, हम प्रमाद करके रह जाते हैं और पीछे वाला सोचता है कि मेरे पीछे वाला करेगा । ऐसे करते-करते वह कर्म हो ही नहीं पाता और बाद में उसका प्रायश्चित्त करते हैं, फिर विचार करते हैं अगर मैं वो काम

उसी समय कर देता तो ये दिन न देखना पड़ता । इन सब में हमको परिवर्तन लाना है । ये बहुत छोटी बात है, सूक्ष्म बात है किन्तु ये जो हम नित्य कर्म करते हैं उसमें कुशलता आएगी उसमें हमारा स्तर बढ़ेगा । छोटी बातों पर जब हम ध्यान देते हैं न तब कहीं जाकर बड़ी बात को समझ पाते हैं, तब सदाचार में ढल पाएंगे । वास्तव में प्रभु जो कुछ करते हैं उस के सामने मैं कुछ नहीं हूँ । गीता में एक बात आती है - सर्वारम्भा परित्यागी- स्वामी चिन्मयानन्द जी इसको बहुत अच्छी तरह से समझाते हैं कि हर व्यक्ति इसको गलत समझता है, वो सोचता है कि मुझे कुछ करना नहीं है । भगवान ने ये नहीं कहा है कि कुछ करना नहीं है, भगवान ने कहा है कि तुम नया कुछ कर ही नहीं सकते, जो मैने बनाया है उसका उपभोग कर सकते हो, अपने जीवन में उसका प्रयोग मात्र कर सकते हो । संसार में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जिसको मनुष्य ने बनाया हो, सब कुछ परमात्मा ने बनाया है । सृष्टि कैसे बनी ये एक प्रश्न है शैव दर्शन में-स्वेच्छया स्वपितो विश्वम् उन्मीलयति अर्थात् अपनी खुद की इच्छा से अपने ऊपर विश्व की कल्पना की गयी है । फिर उस विश्व में मनुष्य के लिए चार आश्रम का निर्माण किया है जिससे चारों आश्रमों के द्वारा निश्चित कर्म करता हुआ जीवन निर्वाह करे । उनमें से एक गृहस्थ आश्रम भी है जिसको धन्य कहा गया है, क्यों धन्य कहा गया है ? क्योंकि गृहस्थ आश्रम में रहकर भक्ति करना बहुत बड़ी बात है । भक्ति में भी प्रभू से किस तरह से वार्तालाप हो, दर्शन हो? तो हम स्वाध्याय करते हैं उसमें आता है कि आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः.....प्राणाः शरीरं गृहम्.....!! अर्थात् ये जो मेरे चैतन्य तत्त्व में विद्यमान आत्म

संसार में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जिसको मनुष्य ने बनाया हो, सब कुछ परमात्मा ने बनाया है ।

बाबा जी कहते थे कि अपने अहंकार को मन्दिर के बाहर अपनी चप्पलों के साथ छोड़कर आओ और मन्दिर में पूर्ण समर्पित भाव से पूजा और ध्यान करो ।

स्वरूप है वो हे प्रभो ! आपका ही अंश है और हमारी जो बुद्धि है वो शक्तिस्वरूपा गिरिजा है । बाबा जी कहते थे कि भगवान के पास जाकर कुछ मांगों मत क्योंकि जो भी दिया है अब तक वो प्रभू ने ही तो दिया है आगे भी वो ही देगा । कैसी स्थिति होती है कि मन्दिर के अन्दर सेठ मांगता है और मन्दिर के बाहर भिखारी मांगता है अर्थात् दोनों ही भिखारी हैं । जो कुछ भी हम खाते हैं या कर्म करते हैं तो आपको ये विचार करना है ये सब मैं अपने प्रभु के लिए कर रहा हूँ । मेरा सब कुछ तुझे अर्पित है । मनुष्य संसार में रहते हुए अनेक कर्मों में लिप्त रहता है, वह विचार ही नहीं करता कि इसके आगे भी संसार में बहुत कुछ करना होता है, विवेक शून्य होकर आचरण करता है । हम जो सदाचार की बात करते हैं वह उसमें कहीं न कहीं मात खा ही जाता है और अपने स्तर से, अपने व्यवहार से, समाज में गिर जाता है । वह उस परमपिता परमेश्वर का भजन, संकीर्तन नहीं करता है अपने अहं के कारण किसी महापुरुष के शरण में नहीं जाता है अगर जाता भी है तो उनकी कही हुई बात को मानने को तैयार नहीं होता है । ये सब वह अपने अहंकार के कारण, अपने विवेकरहित विचारों के कारण करता है । बाबा जी कहते थे कि अपने अहंकार को मन्दिर के बाहर अपनी चप्पलों के साथ छोड़कर आओ और मन्दिर में पूर्ण सम र्पित भाव से पूजा और ध्यान करो । जब तक हम में अहं रहेगा हम अपने आपको स्थिर नहीं कर पाएंगे, प्रभु के समक्ष अपने भाव प्रकट नहीं कर सकते क्योंकि अहं होने से हम अपने आपको बड़ा समझते हैं । हम नहीं चाहते कि हमें कोई उपदेश दे, मैं तो सब जानता हूँ, मुझे क्या जरुरत है ये सब बात सुनने की, मैं तो सर्वज्ञानी हूँ । हमें अपने

हमारे ऋषि मुनियों के द्वारा कही हुई बात समझो बहुत सरल है, सुलभ है

चित्त को प्रभु के ध्यान में लगाना है अर्थात् प्रभू से जोड़ना है क्योंकि वह चित्त परमस्वरूप है । कहीं आता है कि चित्त क्या है ? तो परमात्मा की वही चैतन्य शक्ति परमात्मा के संकुचित रूप से हमारे शरीर में प्रवेश करति है । हमारे ऋषि मुनियों के द्वारा कही हुई बात समझो बहुत सरल है, सुलभ है । आप इसमें अटक जाते हो कि संस्कृत में लिखा हुआ है जिससे मैं समझ नही पाता हूँ तो आप संस्कृत पढ़ो, थोड़ा तो अध्ययन करो । जब हम इस संसार में आते हैं तो सब अपना प्रारब्ध लेकर आते हैं । उस समय हमें पता नहीं चलता है कि अच्छा क्या है, सत्य क्या है ? परन्तु एक बन्धन में मनुष्य आ जाता है, उसकी अन्तरात्मा उसको सत्य बताती भी है फिर भी वह सुन नहीं पाता है क्योंकि वह उन नियमों के बन्धन में बँधा हुआ है । बाद में अगर वह जिज्ञासु प्रवृत्ति का है तो सत्य की खोज में निकलता है, खुद को जानने की कोशिश में वह भटकता है । प्रभु कृपा से उसको कोई बाबा जी जैसा महापुरुष मिल जाता है फिर वह अपना सारा जीवन उन सद्गुरु की शरण में बिताता हुआ भजन, ध्यान, सत्संग करता है और अपना कल्याण कर लेता है । अगर चंचल स्वभाव है तो कुछ समय में वहाँ से छोड़कर वापस आ जाता है । हमारे यहाँ श्रद्धा रखने को कहा गया है कि हम गुरु की बात पर विश्वास करें, शास्त्र के द्वारा की गई बातों पर विश्वास करें और कुछ पूछें नहीं । परन्तु मैं लोगों से कहता हूँ कि आप अगर शास्त्र पढ़ेंगे तो आप ये देखेंगे कि वो गुरु और शिष्य के बीच में संवाद है । अनुचित न पूछा जाए, बिना समझे न पूछा जाए, ये हमको कहा गया है । भगवान अर्जुन को एक बात बताते हैं, समझाते हैं । अर्जुन कहता है ऐसे कैसे हो सकता

है फिर भगवान उसको कोई और प्रक्रिया लेकर उसी बात को पुनः समझाते हैं । थोड़ा समझता है, थोड़ा नहीं समझता है क्योंकि सुनते समय जब हम श्रवण करते हैं एक तो हम एक साथ पूरा नहीं सुनते हैं, श्रवण करते- करते हम अपनी बुद्धि चलाते हैं, हम उस बात को लेकर विचार करने लगते हैं तो दो काम एक साथ चलता है इसलिए श्रवण पूरा न होने के कारण बात को पूरा समझ नहीं पाते हैं । परन्तु कहा जाता है कि जब हम सुनें तो पूर्णतः श्रवण करें, उसके बाद मनन करें, चिन्तन करें । आध्यात्मिकता जो है मेरे अपने अनुभव में ये सिर्फ बात, विचार नहीं हैं, इसको सिर्फ बुद्धि से ही समझ सकते हैं ऐसा नहीं है, अनुभव भी उसके साथ-साथ चाहिए । हमें महापुरुषों की संगति के लिए कहा गया है तो मैं कहता हूँ कि महापुरुष की संगति में हम अगर बैठे हैं, आवश्यक नहीं है कि महापुरुष कुछ बोलें और हम कुछ सुनें । उनके समीप में बैठकर उनका जो आत्म अनुभव का प्रभाव जिसका स्फुरण हो रहा हो, जो हमें इन स्थूल आंखों से दीखता नहीं है परन्तु हम अगर अपने आप को वहाँ ले जाएँ तो वहाँ हम उस आत्मा के प्रभाव का अनुभव कर सकते हैं । परन्तु वहाँ हमें पहुँचना है । हम अधिकांश ऊपर ही ऊपर रहते हैं । समुद्र में बहुत से लोग तैरते हैं, कुछ लोग किनारे पर तैरते हैं कुछ लोग ऊपर-ऊपर तैरते हैं परन्तु कुछ लोग ऐसे होते हैं जो समुद्र में गहराई में जाकर तैरते हैं तो वैसे ही मनुष्य आध्यत्मरूपी सागर में भी प्रायः किनारे- किनारे पर रहते हैं, उनको डर लगता हैं कि कहीं मैं इस संसार से विमुख न हो जाऊँ,मुझे तो अभी बहुत कुछ करना है। गाड़ी खरीदनी है, अच्छे-अच्छे कपड़े पहनने हैं और यहाँ अगर ज्यादा गहराई में चला गया तो

जब हम सुनें तो पूर्णतः श्रवण करें, उसके बाद मनन करें, चिन्तन करें ।

जब हम प्रारब्ध रूपी लोहे पर पुरुषार्थ के हथोड़े से दबाब डालेंगे तब कहीं जाकर तुम जैसा रूप देना चाहते हो दे सकते हो ।

सब कुछ रह जाएगा । ऐसे मनुष्य सत्संग तक ही सीमित रहते हैं और आगे नहीं जाते । बहुत सारे लोग कहते हैं कि ध्यान लगता ही नहीं है । मैं कहता हूँ कि थोड़ा समय तो बिताओ, थोड़ा पुरुषार्थ तो करो, थोड़ा गहराई में तो जाओ । म ेहनत करना नहीं चाहते हो तो कहाँ इष्ट सिद्ध होगा । वृक्ष लगाओ और लगाकर छोड़ दो पानी वगैरह कुछ दो मत तो कहाँ से फल की प्राप्ति होगी । उसके लिए भी तो तुम्हें मेहनत करनी होगी, धैर्य धारण करना होगा तब कहीं जाकर फल प्राप्त होगा । कुछ प्रारब्ध होता है, प्रारब्ध हमें लेकर के आता है बाद में हम पर निर्भर है कि हम कैसे अपने प्रारब्ध को फलित करें । कुछ करना ये हम ारा कर्त्तव्य है । जब हम प्रारब्ध रूपी लोहे पर पुरुषार्थ के हथोड़े से दबाब डालेंगे तब कहीं जाकर तुम जैसा रूप देना चाहते हो दे सकते हो । परन्तु जब हम परिश्रम करते नहीं है और हमारे साथ कुछ घटित हो जाता है तो कहते हैं कि मैं क्या करुँ ये सब तो भाग्यवश हो रहा है । तब भाग्य को दोष देते हैं । भगवान ने भी गीता में कहा है कि मैं तेरा साथ दूँगा लेकिन मेरे बताए मार्ग का अनुसरण कर, मेरे उपदेश का पालन कर ,मेरी कही हुई बातों को लेकर बैठ मत, उठ और पुरुषार्थ कर, तब तू विजयी होगा । नीतिशास्त्र में आता है- उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः अर्थात परिश्रम से ही कार्य की सिद्धि होती है न कि मन में सोच लेने मात्र से । मैं कबीर दास जी की बात को लेकर कहता हूँ कि कल जो करना है वो आज ही कर लो और जो आज करना है वो अभी कर डालो प्रमाद मत करो । प्रमाद हमारे मन का भ्रम मात्र है इसको अपने जीवन से निकाल फेंको । कुछ लोग प्रारब्ध को नहीं मानते हैं वो सिर्फ

पुरुषार्थ को ही एकमात्र साधन समझते हैं और परिश्रम करते हुए सफल होते हैं । लेकिन उनको भी उतना ही प्राप्त होता है जितना उनके भाग्य में लिखा होता है उससे ज्यादा वो प्राप्त नहीं कर सकते या उन्हें मिलता नहीं है । भगवान ने हमें बुद्धि दी है हम विचार करें कि किस तरह, कैसे अपने आप में परिवर्तन लाएँ और अपने जीवन को सार्थक बनाएँ ।

भगवान ने हमें बुद्धि दी है हम विचार करें कि किस तरह, कैसे अपने आप में परिवर्तन लाएँ

सद्गुरुनाथ महाराज की जय